REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2025

हरिशंकर परसाई के कथा - साहित्य में सामाजिक - राजनैतिक परिदृश्य

प्रतिमा सिंह
भैरब गांगुली कॉलेज
SACT I

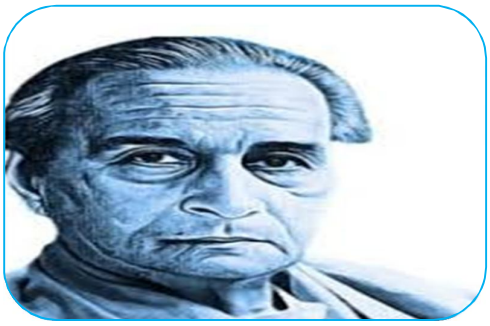

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य -जगत में हरिशंकर परसाई का आगमन एक व्यंग्य लेखक के रूप में होता है। जिन्होंने भारतीय समाज की वर्ग - विसंगतियों को पहचानकर उसे अपनी लेखनी के माध्यम से पाठक वर्ग के समक्ष ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया। हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को सिर्फ एक विधा या मनोरंजन की वस्तु न बना उसे सामाजिक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया। परसाई अपनी लेखनी में न सिर्फ सामाजिक विद्रुपताओं को स्थान देते हैं,बल्कि राजनैतिक व्यंग्य के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर भी चोट करते चलते हैं।

हरिशंकर परसाई ने जब लेखन कार्य शुरू किया था, तब व्यंग्य अपने बाल्य- अवस्था में था।वह साहित्य जगत में अपने अस्तित्व को लेकर संघर्ष कर रहा था।परसाई के पहले व्यंग्य लेखन सिर्फ राजनीति पर ही आधारित थी परन्तु परसाई ने, "व्यंग्य के लिए असंख्य नए क्षेत्र जुटाए जिनपर पहले किसी की दृष्टि नहीं हुई थी।"(1) परसाई जी की पहचान निबंधकार, उपन्यासकार,संमरण ,यात्रा - वृतांत, कॉलमिस्ट, लघु कथाकार और कहानीकार के रूप में होती है।परंतु उनकी लेखनी की शुरूआत ' जबलपुर ' से प्रकाशित पत्र ' प्रहरी ' में छपी कहानी ' पैसे का खेल ' से होती है। आरम्भिक दौर की कहानियों का विषय - वस्तु ' सामाजिक ' ही था। यही वजह है कि परसाई के कथा साहित्य में आम आदमियों के सरोकार,राजनैतिक,धार्मिक, सामाजिक परिवेश अधिक दिखाई पड़ते हैं। आम आदमी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता इतनी गहरी है कि उस दौर के कहानीकारों से उनकी कहानी अलग नज़र आती है। आलोचक मधुरेश लिखते हैं," उनकी कहानियां पतनशील बर्जुआ समाज में मूल्यगत संक्रमण, विपर्यय और स्खलन की स्थिति में एक नैतिक हस्तक्षेप की हैसियत रखती दिखाई पड़ती है।" (2)

परसाई में समाज में कोढ़ की तरह फैली दहेज - प्रथा पर कलम चलाते हुए 2जनवरी 1949 में प्रकाशित एक कहानी "वर - विक्रय" लिखते हैं जो "प्रहरी" पत्रिका में छपती है।इस कहानी में परसाई जी ने दहेज की भयावता और उसकी विद्रूप रूप

को उजागर करते हैं। दहेज प्रथा इतना विकराल होता जा रहा कि उसकी चपेट में समाज का हर वर्ग फंसा हुआ है । फिर वो अमीर हो या गरीब - सभी अपने बेटे से विवाह कराने का निश्चित ' रेट ' लगाए बैठे हैं। उस बेटे पर किए गए खर्च का हिसाब कन्या - पक्ष से वसूल लेना चाहते हैं।वे लिखते हैं,"मैं नहीं जानता था कि वर - विक्रय हमारे समाज में इतने वैज्ञानिक तरीके से होने लगा है कि फाइल,रजिस्टर,रसीद इत्यादि रखे जाने लगे हैं।"(3)

यह बीमारी हमारे समाज में इस तरह फैली हुई है कि वर - पक्ष के माता - पिता बिना किसी झिझक के खुलेआम अपनी संतानों की बिक्री करते नजर आते हैं। परसाई जी आगे लिखते हैं ," वह समय अब दूर नहीं है जब वर का पिता लड़की वालों से ' टेंडर ' बुलवाएगा और अधिक से अधिक कीमत लगाने वाले को ही अपना लड़का देगा।"(4) । परसाई जी ऐसे दहेज लोभियों को लक्ष्य करते हुए कहते हैं कि इनके गले में तख्ती लगाकर मवेशियों के बाज़ार में खड़ा कर देना चाहिए और ' बिके हुए लड़को' को गले में रस्सी बांधकर कन्या - पक्ष को मकवेशियों की तरह सौंप दिया जाना चाहिए।

हरिशंकर परसाई समाज में रहने वाले ' वहशी पुरुषों ' पर भी व्यंग्य करते हैं जिनकी नज़र स्त्रियों के ' देह ' पर ही टिकी रहती हैं।ऐसे पुरुष स्त्रियों को सिर्फ उसकी ' देह ' से आंकता है।उसकी नज़र हमेशा ' स्त्री के अंग - विशेष ' पर ही जाकर टिकती है,फिर वो उसकी उसकी बेटी की उम्र की हो या बहू। आज भी समाज में अधिकांश स्त्रियां,बेटियों इस समस्या से रूबरू हो रही। गली, मोहल्ले, बसों आदि जगहों पर शोहदों की गंदी नज़र का सामान कर रही। "एक लड़की पांच दीवाने " कहानी में परसाई ने इसी स्थिति का चित्रण किया है।जहां एक सरकारी नौकर की पत्नी सिर्फ बच्चे पैदा करने की मशीन बना दी गई है और बड़ी बेटी कच्ची उम्र में ही घर की जिम्मेदारियों के बोझ एवं समाज की वहशी निगाहों की चुभन से बड़ी हो जाती है। समाज का वातावरण उसे घूर - घूर कर यह एहसास दिला देता है कि अब वो बड़ी हो चुकी है। परसाई लिखते हैं," मुहल्ला ऐसा है कि लोग 12- 13 साल की बच्ची को घूर - घूर कर जवान बना देते हैं।वह समझने लगती है कि कहां घूरा जा रहा है। वह इन अंगों पर ध्यान देने लगती हैं।ब्लाउज को ऊंचा करने लगती है।नीचे कपड़ा रख लेती है। कटाक्ष का अभ्यास करने लगती हैं।"(5)

' एक मध्यवर्गीय कुत्ता ' कहानी में परसाई ने मध्यवर्गीय समाज और इसके चरित्र पर व्यंग्य किया है।इस कहानी के माध्यम से मध्यवर्ग के उस चरित्र पर व्यंग्य किया है जो एक तरफ ' एलीट वर्ग ' होने का दिखावा करता है तो दूसरी तरफ ' सर्वहारा - वर्ग ' का साथी भी बना फिरता है। परन्तु एक समय के बाद अपनी दोनों ही पहचान खो बैठता है। परसाई लिखते हैं ," यह कुत्ता उन सर्वहारा कुत्तों पर भौंकता भी है और उनकी आवाज में आवाज भी मिलात है।कहता है - "मैं तुम में शामिल हूं।' उच्चवर्गीय झूठा रोब भी और संकट के आभास पर सर्वहारा के साथ भी - यह चरित्र है इस कुत्ते का। यह मध्यवर्गीय चरित्र है।"(6) इस मध्यवर्गीय समाज पर व्यंग्य करते हुए परसाई कहते हैं कि इस वर्ग के आदमियों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। यह वर्ग किसी का नहीं होता -,"यदि आप भूखे मरते कुत्ते को रोटी खिला दें तो वह आपको नहीं काटेगा" कुत्ते में और आदमी में यही मूल अंतर है।"(7)

परसाई का लेखन - संसार जैसे - जैसे आगे बढ़ता जाता है,उनकी कहानियों का विषय सामाजिक संदर्भों से निकलकर राजनैतिक होता जाता है। राजनीति उनकी कहानियों का मुख्य स्वर रहा है।उनका मानना था कि राजनैतिक विसंगतियों पर बिना प्रहार किए समाज का कल्याण संभव नहीं। यही वजह है कि कालान्तर में उनकी कहानियों का केंद्र बिंदू नेताओं,प्रशासन, शासन में फैले झूठ, भ्रष्टाचार, पाखंड आदि पर व्यंग्य रूपी प्रहार ही अधिक दिखलाई पड़ता हैं।

' भेड़ और भेड़िया' कहानी में जंगल में लोकतंत्र की स्थापन और उसके इर्द- गिर्द रची जा रही शासक व शोषक वर्ग द्वारा षड्यंत्र को केंद्र बिंदू बनाया गया है। जंगल में एक दिन यह घोषणा होती है कि अब जंगल राज खत्म कर लोकतंत्र की स्थापना की जाए। भेड़ इस घोषणा से खुश हैं परंतु भेड़िया और सियार सत्ता चले जाने के भय से डरे हुए हैं। अपनी सत्ता बचाए रखने के लिए भेड़िया चुनाव योजना के तहत अपना रंग,रूप बदलकर भोली भेड़ों के बीच प्रचार करने पहुंच जाता है," मस्तक पर तिलक लगाया,गले में कंठी पहनाई और मुंह ने घास के तिनके खोंस दिए।"(8) और भोली भेड़े भेड़िए के इस छलावे में आकर दुबारा उसे ही अपना शासक चुन लेती है।बूढ़ा सियार बड़ी ही होशियारी से एक भक्षक को जनता का शुभचिंतक बना गद्दी पर बैठा देता है और भक्षक भेड़िए भोली भाली भेड़ों का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्हीं का शिकार करने लगीं।।वर्तमान राजनीति में भी यही सब है। भोली जनता को सुरक्षा प्रदान करने का आश्वासन दे उनकी ही निरीहता का लाभ उठाती हैं।

देश में जनतंत्र स्थापित करने में बुद्धिजीवी वर्ग की अहम भूमिका होती है। वो जनता ने जनतांत्रिक अधिकारों को जागृत कर सही शासक चुनने की क्षमता को विकसित करते हैं, परन्तु आज के युग में ये बुद्धिजीवी शासक के हाथों की कठपुतली बने हुए हैं। ' भेड़ और भेड़िया ' कहानी में इन बिधिजीवियों पर भी करारा व्यंग्य किया गया है," बूढ़ा सियार बोला,' ये बड़े काम के है।आपका सारा प्रचार तो यही करेंगे। इन्हीं के बल पर आप चुनाव लड़ेंगे।.....ये तीनों सच्चे नहीं हैं,रंगे हुए हैं महाराज ।"(9)

' मुंडन ' कहानी भी सरकारी तंत्र की नीतियों और नियमों पर व्यंग्य करती है। साक्ष्य होने के बाद भी उसे नज़रअंदाज कर दिया जाता है। आयोग गठित कर किसी भी फैसले को लंबा खींचना और अंत में सरकार के पक्ष में ही फैसला देना ही सरकारी तंत्र में न्याय व्यवस्था की कहानी हैं।इस कहानी में नेता जिनका मुंडन हो जाता है। जनता और शासन तंत्र - (पक्ष - विपक्ष दोनों) अटकले लगाने लगती हैं। विपक्ष द्वारा प्रश्न करने पर आयोग गठित कर दिया जाता है और लंबे इंतजार के बाद जब आयोग अपनी रिपोर्ट देती है तो उसमें लिखा होता है कि नेता जी का मुंडन हुआ ही नहीं था क्योंकि तब तक नेता जी के सिर पर बाल आ जाते हैं," जांच समिति का निर्णय था कि मंत्री का मुंडन नहीं हुआ था।"(10)

पौराणिक कथा पर आधारित कहानी ' सुदामा का चावल ' भी व्यवस्था में निहित भ्रष्टाचार पर प्रहार करती है। सुदामा और कृष्ण के प्रतीक के मध्यम से सरकारी तंत्र में फैले घूसखोरी को पाठक वर्ग के समक्ष रखती है कि बिना घूस के कोई काम संभव नहीं, -"शासन की कड़ाही में जो मलाई चिपकी रहती है उसे हम खुरचते हैं..... महाराज से क्या बिना भेंट के मिलोगे?हमारा भी तो कुछ हिस्सा होगा।"(11) यह वाक्य उसी घूसखोरी को बयां करती है।

पौराणिक पात्रों को लेकर लिखी गई परसाई की बहुचर्चित कहानी ' भोलाराम का जीव ' इन्हीं सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार ,घूसखोरी के इर्द- गिर्द घूमते हुए दिखती है। इस कहानी में भोलाराम उन असंख्य भारतीयों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपना मूलभूल अधिकार भी प्राप्त नहीं कर पाता और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। परसाई जी लिखते हैं, " यह भ्रष्ट नौकरशाही है,जहां उड़ती फाइलों को रिश्वत का पेपर वेट चाहिए ,अन्यथा वे उड़कर इधर - उधर चली जायेंगी।"(12)

परसाई द्वारा रचित ' उखड़े खंभे ' भी शासन तंत्र में व्याप्त मुनाफाखोरी पर व्यंग्य है। इस कहानी में पंडित जवाहरलाल नेहरू की उस उद्घोषणा का माखौल उड़ाया है,जिसमें उन्होंने कहा था कि मुनाफाखोरों को बिजली के खंभों से टांग दिया जाएगा।कहानी की शुरुआत एक काल्पनिक परिदृश्य से होती है - " सुबह होते ही लोग बिजली के खंभों के पास जमा हो

गए।उन्होंने खंभों की पूजा की,आरती उतारी ,उन्हें तिलक किया।शाम तक वे इंतजार करते रहें कि अब मिनाफाखोर टांगे जायेंगे - और अब। पर कोई में टांगा गया।"(13)भोली जनता सत्ता में बैठे लोगों के वादों को सच मान उन पर भरोसा कर लेती है परंतु होता बिलकुल उल्टा ही है," सोलहवें दिन सुबह उठकर लोगों ने देखा कि बिजली के सारे खंभे उखड़े पड़े हैं।वे हैरान हो गए कि रात न आंधी आई ना भूकंप आया,फिर वे खंभे कैसे उखड़ गए।"(14)यह कहानी उस यंत्र की ओर जनमानस का ध्यान आकृष्ट करती है जो अपनी शक्ति के बल पर अपने भ्रष्ट अधिकारियों को भी बचा लेती है।सत्ता में बैठे इन अधिकारियों के लिए कुछ भी संभव नहीं,सिवा जनता के हितों की रक्षा के।

अतः हम कह सकते हैं कि हरिशंकर परसाई की कहानियां यथार्थवादी दृष्टि से युक्त वर्तमान व्यवस्था के प्रति व्यंग्यात्मक प्रहार करती हुई आक्रोश को व्यक्त करती ।इनका साहित्य पाठकों को चुभता ही नहीं वरन सम्पूर्ण मानवीय करूणा की धार भी प्रभावित करता हैं। रवींद्र कालिया जी के शब्दों में कहें तो "ये मात्र हास्य कहानियां नहीं हैं यों हंसी इन्हें पढ़ते - पढ़ते अवश्य आ जाएगी,पर पीछे जो मन में बचेगा ,वह गुदगुदी नहीं,चुभन होगी।मनोरंजन प्रासंगिक नहीं है, वह लेखन का उद्देश्य नहीं। उद्देश्य है - योग का, समाज का, उसकी बहुविध विसंगतियों, अंतर्विरोधों,विकृतियों और मिथ्याचारों का उद्घाटन।परसाई जी की इन कहानियों में हंसी से बढ़कर जीवन की तीखी आलोचना हैं।"(15)

संदर्भ सूची:-

1) वीर भारत तलवार : सामना, पृष्ठ - 19
2) मधुरेश: हिन्दी कहानी - अस्मिता की तलाश, पृष्ठ - 284
3) वर विक्रय ,परसाई रचनावली, पृष्ठ - 42
4) वर विक्रय ,परसाई रचनावली, पृष्ठ - 42
5) एक लड़की पांच दीवाने ,परसाई रचनावली पृष्ठ 17
6) एक मध्यवर्गीय कुत्ता, परसाई रचनावली पृष्ठ 50
7) एक मध्यवर्गीय कुत्ता,परसाई रचनावली,पृष्ठ 50
8) भेड़ और भेड़िया ,परसाई रचनावली, पृष्ठ -80
9) भेड़ और भेड़िया ,परसाई रचनावली, पृष्ठ -81
10) मुंडन, परसाई रचनावली पृष्ठ 15
11) सुदामा का चावल,परसाई रचनावली पृष्ठ 16
12) भोलाराम का जीव, परसाई रचनावली पृष्ठ 98
13) उखड़े खंभे ,परसाई रचनावली, पृष्ठ -93
14) उखड़े खंभे ,परसाई रचनावली, पृष्ठ -93
15) जैसे उनके दिन फिरे,आवरण पृष्ठ की टिप्पणी से उद्धृत।